

समग्र हिंदी व्याकरण

डॉ० प्रेम भारती



प्रकाशक

संदर्भ प्रकाशन, भोपाल

ISBN : 978-81-904999-1-1

समग्र हिन्दी व्याकरण

डॉ. प्रेम भारती

सर्वाधिकार

डॉ. प्रेम भारती

प्रकाशक

संदर्भ प्रकाशन, भोपाल

जे-154, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल

मो. +91 9424469015

संस्करण

प्रथम 2018

मूल्य

रुपये 2500/-

मुद्रण

स्पेसिफिक प्रिन्टर्स

जेड-23, जोन-1, एम.पी. नगर,

भोपाल (म.प्र.)

शब्द-ब्रह्मरूपा है व्याकरण

हे! मेरी आत्मा
मेरे अंतःकरण के आँगन में
तुम व्याकरण बन कर उतरी हो।
नाम-रूप (संज्ञा) का संसार रचकर
तुमने विविध प्राणियों, स्थानों तथा वस्तुओं से
मेरी पहचान करवाई।
सर्वनाम बनकर
मैं, तुम और वह की उपाधि से
संसार में व्यवहार करना सिखाया।
विशेषण बनकर मुझमें सदगुणों का
संख्यात्मक और परिमाणात्मक विस्तार किया।
क्रिया के रूप में तुम्हीं ने मुझे
कार्य के होने और करने की
कला सिखाई।
क्रिया-विशेषण बनकर
मुझे बताया कि
काम, कैसे, कहाँ, कितना और कब करना चाहिए।
सम्बन्धबोधक बनकर तुम्हीं ने संज्ञा और सर्वनाम के साथ
अन्य सम्बन्धों के तार भी जोड़े।
और समुच्चय बोधक बनकर
हर शब्द, वाक्यांश और वाक्य के
माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक रूप का विस्तार किया।

मैं तो केवल एक साधारण जीव हूँ
विस्मयादि बोधक के रूप में
अपने मनोभावों के प्रसून तुम्हें अर्पित करना जानता हूँ।
मृदु-भाषी बनना तुमने सिखाया।
समाज और संस्कृति का वाहक बनना तुमने सिखाया।
भाषा के क्षेत्र में अनुशासन का पाठ
मुझे तुमने पढ़ाया।
तुम्हारी स्तुति के लिए
बस मेरे पास इससे अधिक
शब्द नहीं है।
हे शब्द-ब्रह्मरूपा !
व्याकरण
तुम्हें शत्-शत् नमन् ॥

-डॉ. प्रेम भारती

आमुख

विगत कई वर्षों से विद्यालय और उच्चतर विद्यालय स्तर की कक्षाओं में हिन्दी और व्याकरण का अध्यापन-प्रशिक्षण देते हुए आधुनिक संदर्भ में हिन्दी के एक पूर्ण किन्तु वैज्ञानिक व्याकरण की आवश्यकता का मैं अनुभव करता रहा। आधुनिक हिन्दी की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर इधर जिन व्याकरण ग्रंथों का सृजन किया जा रहा है वे वैज्ञानिक धरातल का स्पर्श तो करते हैं किन्तु उनमें नवाचार का अभाव है। अतः वे छात्रों की आवश्यकता को पूरी नहीं कर पाते।

आज की हिन्दी केवल संस्कृत से आगत, तत्सम, तद्भव और अर्द्ध तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा ही नहीं है अपितु उसमें देशी, विदेशी और संकर-शब्दों का भी समोवश होता जा रहा है, जिससे उनकी पद-संरचना एवं वाक्य विधा में भी परिवर्तन हुआ है। ऐसे कितने ही नियम हैं, जो केवल संस्कृत-निष्ठ शब्दों पर ही पूर्णतः लागू होते हैं किन्तु संकर-शब्दों के साथ उनका निर्वहन असंभव सा हो गया है। अतः उनका स्वरूप और व्याकरण भी बदल रहा है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि विश्वविद्यालय स्तर तक की अनेक कार्यशालाओं में मुझे व्याकरण पर बोलने का अवसर मिला है। समय-समय पर छात्रों तथा प्रतिभागियों के साथ संवाद करते समय मुझे तभी से यह ध्यान आया कि व्याकरण की सैद्धांतिक जड़ता को तोड़ा जाना चाहिए और व्याकरण को एक विषय के रूप में न पढ़ाकर उसे सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ा जाए। इस ध्येय की पूर्ति हेतु मैंने लेखन कार्य किया तथा मुझे लगा कि विषय वस्तु रुचिकर बनती गई और छात्रों को समझ में आने लगी। छात्रों का इससे गुणात्मक सुधार भी हुआ।

आज जिसे नवाचार कहा जाता है- उसमें से तीन गुण ही आवश्यक हैं- समझ विकसित करना, रोचक प्रस्तुति देना और छात्रों का गुणात्मक विकास करना। यही सोच मेरे लेखन का आधार बना।

भारतीय जीवन-दर्शन में परम ब्रह्म ही सर्वशक्तिमान, सर्वत्र विद्यमानकर्ता है और प्रकृति क्रिया। यही कर्ता और क्रिया मिलकर भाषा-संसार की रचना करते हैं। संभव है, कुछ विद्वानों को यह बात उचित न लगे किन्तु मैं तो अपने परिश्रम को सार्थक तभी समझूँगा तब पाठकों को इससे संतोष मिले।

मेरा सभी अध्यापकों से अनुरोध है कि वे इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन करें और व्याकरण को जीवन के हर पहलू से जोड़ने की शैली विकसित करें, तभी व्याकरण की समझ बनेगी और आने वाले पीढ़ी को भी विरासत में हम कुछ दे पाएँगे।

ग्रंथ के विषय में एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि यह ग्रंथ मेरे द्वारा पूर्व में प्रकाशित

व्याकरण की ग्यारह पुस्तकों पर आधारित है। इन पुस्तकों की मौलिकता का दावा तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि नई इमारत गढ़ने में सीमेंट, रेत, ईंट आदि का संग्रह तो करना ही पड़ता है किन्तु विषय-वस्तु के चयन और प्रस्तुतिकरण को रोचक ढँग से रखने का विशेष ध्यान रखा गया है।

इन भावनाओं के साथ मैं उन सभी साथियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके प्रश्न और जिज्ञासा मेरे चिंतन और लेखन का आधार बने। विशेषकर देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद के मालिक श्री रमेश शुक्ल जो हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के भाषा-विभाग के प्रभारी भी रहे हैं। उन्होंने मेरी व्याकरण संबंधी सभी पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

श्री श्याम सुंदर दुबे निदेशक, मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर का जिन्होंने इस विषय में मेरा मनोबल बढ़ाया तथा एक नई दृष्टिकोण विकसित करने का सामर्थ्य दिया।

विशेष रूप से श्री राकेश सिंह जी का जिन्होंने संदर्भ प्रकाशन (भोपाल) द्वारा समग्र व्याकरण प्रकाशित करने का संकल्प लिया और अथक परिश्रम कर समय-सीमा में धैर्य पूर्वक इसका आकल्पन किया। उनकी इस उदारता को मैं भुला नहीं सकता। अन्य कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर उन्होंने मुझे कृतार्थ किया है।

अंत में पाठकों से निवेदन है कि कोई भी कृति अपने आप में पूर्ण नहीं होती है। जिज्ञासाएँ अनन्त हैं और समाधान भी किन्तु उन कमियों की ओर वे अवश्य ध्यान दिलाएँ, जिन्हें आगामी संस्करण में सुधारा जा सके, तो मैं उनका आभारी रहूँगा।

-डॉ. प्रेम भारती

हिन्दी व्याकरण की विकास यात्रा

विषय प्रवेश : हिन्दी व्याकरण का इतिहास जानने की इच्छा हर शोधार्थी को रहती है किन्तु इस संबंध में शोधपूर्ण कार्य देखने में नहीं आया है। जो कुछ भी पढ़ने में आया उससे ऐसा प्रतीत होता है कि- व्याकरण के प्रवर्तक के रूप में पाणिनि का नाम इसलिए उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने ग्रंथ **अष्टाध्यायी** के रूप में एक व्यवस्थित ग्रंथ रचा। नवीं शताब्दी में भर्तृहरि ने **‘वाक्य प्रदीप’** पुस्तक लिखी जिसमें व्याकरण के दर्शनपक्ष का बहुत रोचक वर्णन किया गया है। इस शृंखला में हमें चंद्र का नाम भी 12वीं सदी में आता है, जिन्होंने **‘शब्दानुशासन’** नामक ग्रंथ की रचना की। इस पुस्तक के लेखक ने जन-भाषाओं का विवेचन सुंदर ढंग से किया है। परंतु हिन्दी व्याकरण का प्रथम आचार्य कौन है, इस विषय में निश्चय पूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इसकी विधिवत प्रस्तुति अंग्रेजी विद्वानों द्वारा की गई। ईसाई धर्म के प्रचार के लिए जन-भाषाओं की प्रकृति का अध्ययन करके उन्होंने बोल-चाल के हिन्दी शब्दों और वाक्यों को उसमें उदाहरण स्वरूप रखा।

जार्ज ग्रियर्सन तथा डॉ. पुनीति कुमार चटर्जी ने व्याकरण रचना का प्रयास 1676 ई. के आसपास किया। उर्दू तथा हिन्दी के मिले जुले उदाहरणों से लल्लूलाल द्वारा लिखित **‘हिन्दी कवायद’** भी इस काल की रचना है किन्तु हिन्दी व्याकरण के लेखन का कार्य अंग्रेजी के अनुकरण पर ही चला।

सन् 1876 में केलाग ने तुलनात्मक पद्धति के आधार पर हिन्दी व्याकरण की व्यवस्थित रूप से रचना की। बाद में यही व्याकरण बहुत काल तक आदर्श रूप में बना रहा। इस ग्रंथ का नाम **‘ग्रामर ऑफ दी हिन्दी लैंग्वेज’** (हिन्दी भाषा का व्याकरण) था, जो सन् 1876 में ही प्रकाशित हुआ। उन्होंने 13 अध्यायों में विषय-वस्तु का विस्तार कर इस ग्रंथ की रचना की थी। इसके बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी सन् 1884 में हिन्दी व्याकरण लिखा था जो मात्र 20 पृष्ठ का था। यह व्याकरण प्राथमिक शालाओं के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। कामता प्रसाद गुरु ने 1921 ई. में केलाग की पुस्तक को महत्व नहीं दिया और व्याकरण की ऐसी पुस्तक तैयार की जो आज तक भी सर्वमान्य बनी हुई है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित किया था। हिन्दी का यह सांगोपांग व्याकरण है।

बाद में सन् 1943 में किशोरीदास वाजपेयी द्वारा लिखित ब्रजभाषा का व्याकरण प्रकाशित हुआ। उन्होंने हिन्दी व्याकरण पर आधारित अन्य पाँच पुस्तकें और लिखी-

1. हिन्दी निरुक्त - जिसमें शब्दों के विकास की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।
2. हिन्दी शब्दानुशासन- व्याकरण का तत्त्व दर्शन का स्वरूप रखा गया है।
3. सरल शब्दानुशासन- छात्रोपयोगी संस्करण।

4. भारतीय भाषा विज्ञान
5. हिन्दी वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण।

इस प्रकार वाजपेयी जी ने हिन्दी व्याकरण तथा भाषा से संबंधित साहित्य रचकर हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया तब से लेकर आज तक इस क्षेत्र में जिन अनेक विद्वानों ने कार्य किया उनमें महत्वपूर्ण नाम हैं— डॉ. दीपाशिन्स का। ‘हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा’ नाम की उनकी यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें किसी अल्पभाषा के व्याकरण के नियम आरोपित करने का प्रयास उन्होंने नहीं किया है।

डॉ. श्याम सुंदर दुबे के अनुसार हम कह सकते हैं कि कामता प्रसाद गुरु ने व्याकरण की नींव रखी। वाजपेयी ने हिन्दी व्याकरण का शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत किया। इसी कड़ी में आगे डॉ. बाहरी ने व्याकरण के व्यावहारिक स्वरूप का अनुशीलन किया है किन्तु उसे छुटपुट प्रयत्नों के अलावा नवाचार से जोड़ने का प्रयत्न अभी तक उचित प्रकार से नहीं हुआ है।

हिन्दी व्याकरण की कुछ ऐसी विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है, जिससे पाठक यह समझ ले कि किस प्रकार हिन्दी की व्याकरण संस्कृत व्याकरण पर आधारित होते हुए भी, उससे स्वतंत्र विशेषता भी रखती है। इस ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जाना उपयोगी होगा—

1. हिन्दी व्याकरण में ‘ड़’ तथा ‘ढ़’ आगत ध्वनियाँ हैं। ये ध्वनियाँ संस्कृत व्याकरण में नहीं हैं।
2. हिन्दी व्याकरण में देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग भी होने लगा है। संस्कृत से लिए गए तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग धीरे-धीरे कम हो रहा है। संकर शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा है।
3. हिन्दी संधि के कुछ नए नियम बनाए गए हैं, जबकि संस्कृत के अनुसार स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग संधि भी प्रचलन में हैं।
4. हिन्दी वाक्य-रचना का ढाँचा भी संस्कृत से भिन्न है, जिसके अपने नियम हैं।
5. हिन्दी मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी एक विशेषता है। ये प्रयोग संस्कृत भाषा से भिन्न हैं।
6. संस्कृत व्याकरण में दो प्रकार के रूप देखने को मिलते हैं— तिङन्त और कृदन्त। तिङ्गत में कर्ता या कर्म के अनुसार पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग के रूप भेद नहीं होते। किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार, ‘हिन्दी ने कृदन्त क्रियाओं को अधिक पसन्द किया है क्योंकि यह बहुत सरल और स्पष्ट है। यही कारण है कि हिन्दी की अधिकांश क्रियाएँ कृदन्त हैं।’
7. किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार ‘हिन्दी में संस्कृत के समान विशेषण के साथ अलग विभक्ति लगाने का बखेड़ा नहीं है। विशेषण तो विशेष्य के रंग में डूबा हुआ है। विशेष्य की विभक्तियाँ ही विशेषण की विभक्तियाँ हैं। सर्वनाम में ये विशेषण निर्विभक्तिक होते हैं।’

8. संस्कृत में विभक्तियों के प्रयोग में अनेक रूप भेद होते हैं, हिन्दी में केवल आठ कारकीय विभक्तियों से काम चल जाता है।
9. हिन्दी के सर्वनामों पर संस्कृत की तुलना में प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का अधिक प्रभाव है।
10. हिन्दी के कुछ अव्यय संस्कृत से अवश्य आए हैं किन्तु कुछ उसके अपने भी हैं।
11. संस्कृत में पूर्ण विराम का प्रयोग अधिक होता है किन्तु अन्य चिह्नों का नहीं। हिन्दी के विराम चिह्नों पर अंग्रेजी विराम चिह्नों का प्रभाव देखने में अवश्य आता है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी व्याकरण पर संस्कृत और अंग्रेजी व्याकरण पर प्रभाव अवश्य देखने को मिलता है किन्तु उसकी अपनी दो विशेषताओं—सरलता तथा स्पष्टता के कारण हिन्दी भाषा को वह गौरव प्राप्त हुआ कि आज वह राष्ट्र-भाषा के रूप में विश्वभर में जानी जाती हैं। अतः हमें विद्यालयों तथा महाविद्यालय स्तर पर इसे नवाचार से जोड़ना आवश्यक हो गया है ताकि व्याकरण का विषय रटन विधा तक सीमित न रहे।

मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार कुम्भकार मिट्टी से घड़े बनाता है, उसे सँवारता है। उसी प्रकार भाषा को सही रूप देने का कार्य वैयाकरण का है। भाषा की जड़ है—व्याकरण। साथ ही, व्याकरण शिक्षण का सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध की दृष्टि से भी महत्व अविच्छिन्न रूप में है, यह बात भी हमें अनुभव में लाना होगा। अतः हर वैयाकरण का कर्तव्य है कि वह समाज की प्रवृत्ति, भौगोलिक परिवेश आदि में होने वाले ऐसे परिवर्तनों को समझें और तदनु रूप उसे व्याकरण शिक्षण से जोड़ें।

सामाजिक विकास के साथ-साथ भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहता है। उस परिवर्तन से भाषा मुक्त नहीं हो सकती। अतः हमें व्याकरण के हर पहलू को ध्यान में रखकर भाषा की शुचिता तथा शुद्धता को बनाए रखना होगा और उसमें निहित हर प्रकरण को जीवन और उससे जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों के नए-नए संदर्भों से छात्रों की रुचि तथा सहभागिता के साथ जोड़ना होगा। यह एक चुनौती भरा काम है किन्तु उसे शिक्षक के लिए जो पेट की भाषा के साथ-साथ संस्कार की भाषा भी जानता हो कठिन कार्य नहीं है।

व्याकरण पर यूँ तो अनेक पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं किन्तु प्रस्तुत पुस्तक '**समग्र हिन्दी व्याकरण**' की इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

इसमें विषय-वस्तु को चार शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है—

- (क) प्रसंग (दैनिक जीवन से संबंधित)।
- (ख) परिभाषा
- (ग) प्रकार, पहचान एवं प्रयोग
- (घ) प्रायोजित कार्य

इन शीर्षकों के पीछे हेतु यह है शिक्षकगण व्याकरण की नीरसता तोड़ने के लिए छात्रों को प्रसंगानुकूल कहानियाँ सुनाएँ, उसके आधार पर परिभाषा स्पष्ट करें तथा उसे प्रयोग करने हेतु छात्रों को प्रायोजित कार्य दें। साथ ही, नवाचार की दृष्टि से व्याकरण की समझ विकसित करने

के लिए इस पुस्तक के आधार पर प्रश्न तुम्हारे उत्तर हमारे कार्यक्रम प्रति सप्ताह अथवा मासान्त में रखें ताकि छात्रों का अध्ययन अधिक व्यावहारिक बन सके।

मेरा अनुरोध है, यह प्रयास अंतिम नहीं है, प्रारंभ है। इस प्रयास को आगे भी वैयाकरणों को जारी रखना चाहिए। यह कैसे होगा- इसके लिए व्याकरण लगभग पन्द्रह पुस्तकें मेरी प्रकाशित हुई हैं। उनमें से 11 पुस्तकों को समग्र रूप से यहाँ दिया जा रहा है। पुस्तकों की सूची इस प्रकार है-

क्र.	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	हिन्दी वर्ण और वर्तनी	संदर्भ प्रकाशन, इलाहाबाद (2009)
2.	हिन्दी संधि अवधारणा और अभ्यास (इस पुस्तक के आधार पर संधि पर आधारित साफ्टवेयर तैयार किया जा रहा है)	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2012)
3.	हिन्दी : शब्द और पद	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
4.	हिन्दी व्याकरण : पद व्यवस्था एवं व्यवहार	संदर्भ प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
5.	हिन्दी वाक्य रचना और विधान	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
6.	विराम चिह्न : प्रकार एवं प्रयोग	देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद (2011)
7.	व्याकरण की समझ	देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद (2015)
8.	वस्तुनिष्ठ व्याकरण	अंकुर प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
9.	मुहावरों का खेल और लोकोक्तियाँ	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2015)
10.	कैसे देखें हिन्दी शब्दकोश	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2011)
11.	व्याकरण परिवार कौमुदी (एकांकी संग्रह) (इस संग्रह में नौ एकांकी हैं, जिसका एक एकांकी मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की भाषा भारती में शामिल है।)	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2012)

इन पुस्तकों को अलग-अलग क्रय करने पर महँगी पड़ती है, यह पाठकों का कहना था। अतः पाठकों के अनुरोध पर ही यह प्रयास किया गया है।

नवाचार को ध्यान में रखते हुए आप 'समग्र हिन्दी व्याकरण' की इन पुस्तकों का अध्ययन करेंगे, तो आपको एक नई दृष्टि मिलेगी, ऐसी आशा है।

-डॉ. प्रेम भारती

एफ-9/49, तुलसी नगर, भोपाल

मो. 9424413190